

SHRI BHAJJU SHYAM

Shri Bhajju Shyam is regarded world over as the most significant painter of his generation. He has painted in the tradition of Gond Pradhan bards well known for painting their songs. He has exhibited his paintings not only in India but also in many other countries of the world like Canada, Hong Kong, England, Germany, Netherland, France, Reunion Island, Kyrgyzstan and others.

2. Born on June 19, 1971, in the Gond tribal village of Patangarh, in the forests of Madhya Pradesh, Shri Bhajju says, “My mother painted the walls of our home, as is our tradition, and she would ask me to help her paint the parts she could not reach.” The family sent their three children to school, but they were too poor to put them all through the full term. Sixteen year-old Bhajju left his village and came to Bhopal in search of work. After failing as night watchman his journey as a painter started by working as an apprentice with a pioneering and well recognized Gond artist Jangarh Shyam. He started independent work soon after.

3. Recognition came with his 2002 visit to London, where he was invited to paint the interior of an upmarket Indian restaurant 'Masala Zone' at Islington which was published as a travelogue titled 'The London Jungle Book'. The book was subsequently published in several international languages such as Italian, Dutch, French, Korean, Portuguese and German. It had since become part of an exhibition that toured the UK, Germany, Holland, Italy and Russia. He was invited as a writer to the Book Fair held in Paris for the publication.

4. Since then Shri Bhajju has co-edited a compendium of Gond Art Signature: Patterns in Gond Art and been the sole artist behind two more visual picture books for Tara: The Flight of the Mermaid and That's How I See Things. His latest book, Alone in the Forest is a children's book that draws upon his own childhood fears of the forest to explore the psychology of fear.

5. In all his works, Shri Bhajju's captivating visuals and easy storytelling style fuse his perceptions of the modern world with his tribe's unique visual language. Perhaps the most versatile artist of the Gond art tradition, Bhajju uses inherited forms in very current and expressive ways, while experimenting with innovative subjects and new ideas. “There are new influences in my work, but my art is still the same,” he has said, reflecting upon his success.” I never expected this kind of response; I thought people would find my way of looking at the world odd.”

6. Several solo exhibitions of Shri Bhajju's painting have been sponsored by individuals, galleries and institutes from within India and abroad. The bibliography on his works contains such authors as John Bowles, 2009, Painted Songs & Stories The Hybrid Flowering of Contemporary Pardhan Gond Art, INTACH Regional Chapter Bhopal where it mentions his works as “The good humor, wit and decorative elan of Bhajju's illustrations combine naive wonder with a sophisticated poise in the face of the Western metropolis”.

7. Shri Bhajju has many awards to his credit including Ojas Award, Literature Festival Jaipur-2014, CRESCER magazine 30 Best Children's Book Award Brazil-2011 for Night Life of Tees, BBBY Honour List 2010 London, illustrator Category on 'That's How I See Things' honoured by Indira Gandhi Rashtriya Manava Sangrahalaya, Bhopal-2009, Bologna Ragazzi Award, 'New Horizons, 2008 on 'The Night Life of Tees' and includes several state awards.



श्री भज्जू श्याम

श्री भज्जू श्याम अपनी पीढ़ी के सर्वाधिक प्रतिष्ठित चित्रकार के रूप में विश्व विख्यात हैं। आपने अपने गीतों का चित्र निरुपण करने के लिए प्रसिद्ध गौंड प्रधान कवियों की परंपरा का अनुसरण करते हुए अपनी चित्रकला को मूर्त रूप प्रदान किया गया। आपने न केवल भारत अपितु, कनाडा, हांगकांग, इंग्लैंड, जर्मनी, नीदरलैंड, फ्रांस, रियूनियन द्वीपसमूह, किर्गिस्तान तथा विश्व के अन्य अनेक देशों में अपने चित्रों का प्रदर्शन किया है।

2. आपका जन्म 19 जून, 1971 को मध्य प्रदेश के जंगलों में स्थित गौंड आदिवासी ग्राम पाटनगढ़ में हुआ आपने बताया कि, "मेरी मां हमारे घर की दीवारों को रंगा करती थी, जैसी की हमारी परंपरा थी, और वे मुझे घर के उन हिस्सों को रंगने में मदद करने का कहती थी जहां वह नहीं पहुंच पाती थीं"। परिवार ने अपने तीनों बच्चों को विद्यालय भेजा किंतु गरीबी के कारण वे आपको पूरे सत्र तक नहीं पढ़ा पाए। 16 वर्ष की आयु में आप अपना गांव छोड़कर रोजगार की तलाश में भोपाल आ गए। रात के चौकीदार की नौकरी करने में असफल रहने के उपरांत, चित्रकार के रूप में आपकी यात्रा का शुभारंभ उस समय हुआ जब आपने एक पुरोधा एवं सुसज्जित गौंड कलाकार जागड़ श्याम के पास प्रशिक्षु के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। इसके तुरंत बाद ही आपने स्वतंत्र रूप से कार्य करना शुरू कर दिया।

3. वर्ष 2002 में लंदन यात्रा से आपको एक नई पहचान मिली, जहां आपको इंस्टिलंगटन में एक उच्च आय वर्गीय लोगों के लिए बने भारतीय रेस्तरां 'मसाला जोन' की भीतरी दीवारों पर चित्रकारी करने के लिए आमंत्रित किया गया था, तथा इसे "द लंदन जंगल बुक" शीर्षक से यात्रा विवरण के रूप में प्रकाशित किया गया था। बाद में इस पुस्तक को इटेलियन, डच, फ्रेंच, कोरियन, पुर्तगाली तथा जर्मनी जैसी अनेक अंतर-राष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशित किया गया। यह पुस्तक उस प्रदर्शनी का भी हिस्सा रही जिसे यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, हॉलैंड, इटली तथा रूस में भी प्रदर्शित किया गया था। आपको पुस्तक के लिए पेरिस में आयोजित पुस्तक मेले में लेखक के रूप में आमंत्रित किया गया।

4. तब से आप गौंड आर्ट सिग्नेचर: पैटर्न इन गौंड कला के सार संग्रह का सह-सम्पादन कर रहे हैं तथा तारा पब्लिकेशन्ज के लिए "द फ्लाइड ऑफ द मरमेड" तथा "दैट्स हाऊ आई सी थिंग्स" नामक दो और विजुअल पिक्चर बुक्स की भी अकेले ही रचना की है। आपने हाल ही में बच्चों के लिए 'एलोन इन द फॉरेस्ट' नामक पुस्तक को लेखनीबद्ध किया है जिसे भय की मनोवृत्ति की गवेषण करने के लिए आपने बचपन में जंगल के प्रति आपने स्वयं के डर का चित्रण किया है।

5. मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्यों तथा सरल कहानी कहने के तरीके की वजह से आपकी सभी कलाकृतियों में आधुनिक जगत की आपकी अनुभूति आपकी जनजाति की विलक्षण दृश्यात्मक भाषा से ओत-प्रोत दिखाई देती है। आप गौंड कला के सर्वाधिक प्रतिभावान कलाकार हैं। आप नवीन विषयों एवं विचारों के साथ प्रयोग करते हुए परंपरा से प्राप्त कला के रूपों को नवीनतम एवं अभिव्यंजनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त है। अपनी सफलता पर दृष्टिपात करते हुए आपने कहा था कि "मेरी कला में नवीन कला का प्रभाव देखा जा सकता है किंतु मेरी कला की अन्तरात्मा अभी भी वैसी ही है" मुझे कभी भी इस प्रकार की सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी; मुझे लगा था कि लोगों को विश्व को देखने का मेरा नजरिया शायद विचित्र लगेगा।

6. आपकी अनेक एकल प्रदर्शनियों को भारत तथा विदेश के अनेक व्यक्तियों, कला दीर्घाओं तथा संस्थानों द्वारा प्रायोजित किया गया है। आपकी रचनाओं संबंधी ग्रंथसूची में जॉन बाउल्ज जैसे लेखकों से जुड़ी रचना, 2009 पेंटिड सांग्स एंड स्टोरीज, इंटेक रीजनल चैप्टर भोपाल शामिल है। आपकी रचनाओं के विषय में यह कहा गया है कि "भज्जू के दृष्टांतों की मधुर व्यंगात्मकता, वाक्पटुता तथा आलंकारिक अभिव्यक्ति में पश्चिमी महानगरों के समक्ष निकटतम विस्मय को परिष्कृत संतुलन के साथ मिश्रित किया गया है।"

7. आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें ओजस पुरस्कार, जयपुर साहित्य महोत्सव 2014, नाइट लाइफ ऑफ टीज के लिए सी आर ई एस सी ई आर मैगनीज 30 बेस्ट चिल्ड्रन बुक अवार्ड ब्राजील-2011, की बी बी बी आई ऑनर लिस्ट 2010 लंदन इल्स्ट्रेटर कैटेगरी में "दैट्स हाऊ आई सी थिंग्स" के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल-2009 द्वारा सम्मानित बोलोगना रागाजी अवार्ड, "द नाइट लाइफ ऑफ टीज" के लिए न्यू हॉरीजनल 2008 तथा अनेक अन्य राज्य पुरस्कार शामिल हैं।